ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–97
दिनांक– मंगलवार, 30 दिसम्बर, 2025

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 13.7 एवं 10.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 88.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.8 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 0.5 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 15.1 एवं दोपहर में 16.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(31 दिसम्बर, 2025–04 जनवरी, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 31 दिसम्बर, 2025–04 जनवरी, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित अवधि के दौरान उत्तर बिहार के सभी जिलों में तापमान में गिरावट की स्थिति बने रहने की संभावना है। हवा में नमी की मात्रा अधिक रहने तथा लगातार पछुआ हवाएँ चलने के कारण ठंड का प्रभाव बना रहेगा। इस अवधि में कोल्ड डे की स्थिति रहने की संभावना है। सुबह के समय मध्यम स्तर का कुहासा छाया रह सकता है। मौसम शुष्क रहने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान 13 से 15 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 9 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5–6 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है। 1 जनवरी के आसपास पुरवा हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- वर्तमान मौसम आलू की फसल में पिछेता झुलसा (लेट ब्लाइट) रोग के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है। ऐसी स्थिति में जिन खेतों में अभी यह रोग नहीं दिखाई दिया है, वहाँ किसान भाई मेन्कोजेब या प्रोपीनेब या क्लोरोथेलोनिल युक्त फफूंदनाशक दवा का 0.2–0.25 प्रतिशत (अर्थात 2.0–2.5 किलोग्राम दवा प्रति 1000 लीटर पानी प्रति हेक्टेयर) की दर से तुरंत छिड़काव करें। जिन खेतों में रोग के लक्षण दिखाई देने लगे हैं, वहाँ किसी भी सिस्टमिक फफूंदनाशक जैसे साइमोक्सानिल. मेन्कोजेब, फेनोमिडोन. मेन्कोजेब अथवा डाइमेथोमार्फ. मेन्कोजेब का 0.3 प्रतिशत (अर्थात 3.0 किलोग्राम दवा प्रति 1000 लीटर पानी प्रति हेक्टेयर) की दर से छिड़काव करें।
- वर्तमान बदलीनुमा मौसम एवं वातावरण में अधिक नमी के कारण गाजर, मटर, टमाटर, धनिया, लहसुन तथा अन्य रबी फसलों में झुलसा रोग तेजी से फैल सकता है। इस रोग में पत्तियों के किनारे और सिरे से झुलसना शुरू होकर पूरा पौधा प्रभावित हो जाता है। लक्षण दिखाई देने पर डाइथेन एम–45 फफूंदनाशक दवा 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 10 दिन के अंतराल पर 2–3 छिड़काव करें।
- गेहूँ की फसल में 30–35 दिन (पहली सिंचाई के बाद) की अवस्था में विभिन्न प्रकार के खरपतवार उग आते हैं, जो फसल की बढ़वार को प्रभावित कर उपज में कमी लाते हैं। इनके नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरॉन 33 ग्राम प्रति हेक्टेयर एवं मेटसल्फ्यूरॉन 20 ग्राम प्रति हेक्टेयर दवा को 500 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। विलंब से बोई गई गेहूँ की फसल जो 21–25 दिन की हो गई हो, उसमें 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- पिछात मटर की फसल में निकाई–गुड़ाई करें तथा फली छेदक कीट की नियमित निगरानी करें। इस कीट की इल्ली फलियों में जाल बनाकर अंदर प्रवेश कर दानों को खा जाती है, जिससे भारी नुकसान होता है। नियंत्रण के लिए प्रकाश फंदा लगाएँ तथा 15–20 टी–आकार के पंछी बैठका (बर्ड पर्चर) प्रति हेक्टेयर लगाएँ। अधिक प्रकोप होने पर क्विनालफॉस 25 ईसी या नोवल्यूरॉन 10 ईसी का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- नवंबर माह के प्रारंभ में बोई गई रबी मक्का की फसल जो 50–60 दिन की अवस्था में है, उसमें 50 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उर्वरक डालकर मिट्टी चढ़ाएँ। मक्का में तना बेधक कीट की निगरानी करें। उपचार हेतु फोरेट 10 जी या कार्बोफ्यूरान 3 जी का 7–8 दाना प्रति पौधा गाभा में दें। अधिक प्रकोप की स्थिति में डेल्टामेथ्रिन 250–300 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- रबी प्याज की रोपाई प्राथमिकता के आधार पर करें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखें। पौध की रोपाई अधिक गहराई में न करें। पहले से रोपी गई प्याज में निकौनी करें। लहसुन की फसल में भी निकौनी तथा कीट–रोग की निगरानी करते रहें।
- सब्जी वाली फसलों में निकाई–गुड़ाई एवं आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें। अगात बोई गई मटर में चूर्णिल फफूंदी (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग की निगरानी करें। लक्षण दिखाई देने पर कैराथेन 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- तापमान में गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दूध उत्पादन में आई कमी को दूर करने के लिए हरे एवं सूखे चारे के मिश्रण के साथ नियमित रूप से 50 ग्राम नमक, 50–100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु तथा संतुलित दाना खिलाएँ। पशुओं के लिए बिछावन में सूखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः 14.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 7.2 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 10.6 डग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी